NEELAM SHARMA

50

RELEVANCE OF SWAMI VIVEKANANDA'S THOUGHTS IN TODAY'S PERSPECTIVE

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की प्रासंगिकता

PROCEEDINGS
NATIONAL SEMINAR

19th MARCH 2015

Sponsored By
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION, NEW DELHI
(UNDER THE SCHEME OF EPOCH MAKING SOCIAL THINKERS OF INDIA)

EDITOR-IN-CHIEF
Dr. KISHOR KUMAR

EDITORIAL BOARD
Dr. Divya Nath, Dr. Anita Rani Rathore
Dr. Deepti Bajpai, Dr. Vineeta Singh

SWAMI VIVEKANAND STUDY CENTRE
Km. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE
BADALPUR (GAUTAMBUDH NAGAR) U.P.

ISBN: 978-93-80216-06-5

Scanned by CamScanner

RELEVANCE OF SWAMI VIVEKANANDA'S THOUGHTS IN TODAY'S PERSPECTIVE

ISBN : 978-93-80216-06-5

© S.V.S. Centre
K.M.G.G.P.G. College, Badalpur

EDITOR-IN-CHIEF
Dr. KISHOR KUMAR

Published by :
Swami Vivekanand Study Centre
Km. Mayawati Govt: Girls Post Graduate College Badalpur
(Gautambudh Nagar) U.P. - 203207

Note : *Views expressed in the articles belong to the authors; the organizers and publisher are not responsible for them. Also, it is assumed that the articles have not been published earlier and are not being considered for any other Journal.*

Printed by :
Paras Parkashan, Delhi

Scanned by CamScanner

स्वामी विवेकानन्द : कर्मयोग

नीलम शर्मा
असि. प्रो. संस्कृत
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय, बादलपुर

आधुनिक भारतीय दार्शनिक विचारधारा को नूतन दिशा प्रदान करने वाले स्वामी विवेकानन्द एक महान विभूति हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वामी विवेकानन्द के धर्म, दर्शन, शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, इतिहास, अर्थनीति, समाजवाद, राष्ट्रवाद, समाजसुधार नारी जागरण आदि नानाविध विषयों पर मौलिक, अद्वितीय और कालजयी विचार प्राप्त होते हैं। इसीलिए इन्हें युगनायक, युगप्रवर्तक, युगाचार्य, विश्वविवेक, विश्वमानव, राष्ट्रद्रष्टा, विचारनायक, योद्धा, संन्यासी आदि उपाधियों से उपहित किया गया है। शंकराचार्य के अद्वैतवेदान्त का बोधगम्य और वैज्ञानिक भाषा में प्रस्तुतीकरण, वेदान्त के, व्यावहारिक स्वरूप का प्रकाशन और भारत के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए गीता के निष्काम कर्मयोग की उपादेयता का प्रतिपादन करना विवेकानन्द का आधुनिक भारतीय दर्शन को अमूल्य योगदान है।

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन कर्म पर सर्वाधिक बल देता है। स्वामी विवेकानन्द का सर्वप्रमुख वक्तव्य है-

"उठो, जागो और तब तक मत रूको
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए ।"

निःसंदेह उनका यह कथन कर्म की महत्ता प्रतिपादित करता है। विवेकानन्द ने संदैव भारतीयों को कर्म की भावना से आन्दोलित करने की चेष्टा की। वे सर्वदा कर्म के लिये प्रेरित करते थे। इस सन्दर्भ में एक दृष्टान्त दृष्टव्य है -एक बार कोई नवयुवक स्वामी जी के समीप गया और बोला-"स्वामी जी ! मुझे गीता समझा दीजिये। स्वामी जी ने सच्चे मन से कहा-गीता समझने का वास्तविक स्थान फुटबाल

Scanned by CamScanner